वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

सितम्बर – 2015

* सेवक न होकर भी दानी
* धर्म विश्वासों का मनोरंजन
* नीच सुख अनुराग अन्मेल का आधार
* यह मेरी गल्ती नहीं है
* मृत्यु – बोध
* धर्म का नशा
* श्री गंगानगर में विशेष सत्संग

सेवक न होकर भी दानी

किसी भले और महान कारज के लिए दान करना कोई खाला जी का घर नहीं। यह सौभाग्य किसी सौभाग्यशाली जन को ही मिलता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के कारज से बढ़कर दुनिया में कोई काम नहीं। इस कारज के लिए दान देना, हर मनुष्य का महा सौभाग्य है। पिछले देव समाज के सुनहरी समय में सुहृदय जनों वा बड़ी बड़ी फर्मों के जनों को देव समाज के कारज की महानता का पता होता था। उस समय समाज के कारज की दूर – दूर तक धूम थी। तब अमीर लोग हर महीने या हर वर्ष इस निराले कारज को दान देकर तृप्त होते थे। टाटा, बिरले, दिल्ली क्लाथ हाऊस मिल जैसी फर्मे भी इस कारज को दान देना, खुशकिस्मती समझते थे। कई पुराने सेवक या अमीर लोग, हर महीने इस अद्वितीय कारज को दान देकर पाक तृप्ति पाते थे।

अब समाज के बाहर तो क्या, देव समाज के सेवकों के भीतर भी इस निराले कारज को दान देने की पवित्र भावना लोप हो रही है। दान देना तो एक तरफ अपना नियत दान, अखबारों का चन्दा आदि भी अपने आप बहुत कम जन ही अदा करते है। कई लिखने पर भी देने को तैयार नहीं। हमारे संग्राम का और सेवकों के निजी जीवन का स्तर बहुत ही नीचे होता जा रहा है।

ऐसे हालात में भी गंगा अभी सूखी नहीं, हम ऐसे एक हीरा दिल रखने वाले 84 वर्ष के साथी का ज़िकर करने की खुशी प्राप्त कर रहे हैं। वह एक साधारण पुरानी सेविका के पुत्र तो अवश्य हैं, परन्तु सेवक बनने का सौभाग्य प्रतिज्ञाएं पूरी होने के बावजूद भी, पा ही नहीं सके। वह देव समाज को या किसी संस्था को या उसकी शाखा को लाखों रूपये दान कर चुके हैं। और कहीं कहीं हर महीने दान देते हैं। उन्होंने अपनी नेक कमाई से मोगे के कई स्कूलों में, सोलन, श्री अकबरपुर में अपनी माता जी की याद में कमरे बनाने के लिए लाखों रूपये दान देने का सौभाग्य पाया है।

उन्होंने अब डेरा बस्सी में देव आश्रम के लिए भी। इसी वर्ष 1 लाख रुपये (पहले हर साल के दान के ईलावा) दान देने का प्रण किया है। जो बहुत ही प्रशंसनिय वा सम्मान के योग्य है। (वह दान आ चुका है)

उनके नेक दिल की एक और विशेषता है, वह अपने सारे दान को सदा अपने सारे परिवार की तरफ से, या अपने बहन भाईयों की ओर से या अपनी माता समान बड़ी बहन की ओर से दर्शाना चाहते हैं, उसका श्रेय अकेले नहीं लेना चाहते ।

ऐसी हीरे जैसी प्रकृति रखने वाले जन कितने सौभाग्यवान है पाठकों के साथ उनका परिचय करवाने की खुशी हम प्राप्त कर रहे हैं। यह है सम्मान के योग्य श्रीमति लक्ष्मी देवी जी के सपुत्र और श्रीमति बलबीर कौर शर्मा जी के भाई श्री बलवन्त राए जी अरोड़ा ट्रांटो, कैनेडा।

हम ऐसे सुन्दर हृदय को नमन करने की पाक खुशी प्राप्त करने का सौभाग्य पा रहे हैं।

दान प्राप्ति

पिछले एक दो महीनों में निम्नलिखित जनों ने गुरू महाराज के कारज के लिए दान देने की कृपा की।

1) शुरू जून में सुरिन्द्र जी बाली, धर्म पत्नी श्री सतेन्द्र नाथ जी बाली ने 2 हजार रूपये श्रीमान बलदेव सिंह जी को उनसे मिलने पर दिए।

2) जुलाई में श्रीमती कुलदीप कौर जी वालिया हमारे स्कूल से रिटायरड टीचर ने बहुत चाहकर दो हज़ार रूपये दान में दिए।

3) जुलाई में ही श्रीमान अवतार सिंह जी बराड़ और भरपूर जी बराड़ ने कैलीफोर्निया जाने पर 100 डालर दान में दिए।

हम उक्त सब दानी जनों का इस भले काम के लिए दान देने के लिए तहदिल से धन्यवादी है।

– बलदेव सिंह

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 9

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | सितम्बर – 2015 वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

धर्म विश्वासों का मनोरंजन

एक बार एक शहर में मैं एक पुराने, ठोस सेवक के घर सभा रखी क्योंकि माननिय सेवक के बड़े परिवार के बच्चों में एक आध को छोड़कर कोई भी सत्संग में नहीं आता था। घर में सनातनी परिवारों से तीन चार बहुएं आई हुई थी, उनको अपने कट्टर सनातनी विश्वासों के कारण देव समाज की आधुनिक विज्ञान मूलक शिक्षा रास नही आती थी। पत्नियों का रूझान देखकर पुत्र भी अक्सर उसी ओर देखने लग जाते हैं। मेरे उस परिवार में आते रहने से एक पुत्र ने मेरा दिली स्वागत किया और सभा रखने के लिए खुशी खुशी सहमति दी। उन्होंने ने ही कह सुनकर घर की नाक भौं चिढ़ाने, वाली बहुओं को जो देव समाज में रुचि नही रखती थी, समझा बुझाकर सभा में शामिल करने के लिए मना लिया। पहले एक दो भजनों का गान हुआ फिर मैंने सभा कराई। सभा का विषय था "सम्बन्धों में मेल होना चाहिए ।" गुरू महाराज कैसे बिगड़े सम्बन्धों को अपने आद्वितीय प्रभावों के साथ सुन्दर वा स्वर्गिय बना रहे हैं। उसका ब्यान किया गया। सभा में स्वभाविक ही राम जी का अति सुन्दर पुत्र रूप, और लक्ष्मण जी का अनोखा भ्राता रूप, प्रसंगवश बताया गया। सभा समाप्त होने पर घर की बड़ी बहू ने सभा की बहुत प्रशंसा की। दूसरी बहुओं ने भी सहमति से सिर हिलाया। बिना मांगे कई सौ रुपये जबरदस्ती दान में दे दिए। खाने पीने के लिए फल आदि खाने के लिए बहुत आग्रह किया। बड़ी देर तक वह सब बहुंए हमारे पास बैठी रही और बार 2 अपने घर में सभा करवाने के लिए आग्रह करने लगी। उनके इस रिस्पौंस से हमें भी बहुत तसल्ली मिली। वह नौजवान जिसने सभा रखने का आग्रह किया था, वह हमें See-off करने के लिए काफी आगे तक आए । उन्होंने अपनी खुशी का प्रकाश करते हुए बताया" हमारी स्त्रियों का श्रीमान जी आपने दिल जीत लिया है। मैं तो उनकी खुशी, अपने आप भी अनुभव कर रहा था कि जो स्त्रियां सभा के नाम पर नाक चढ़ाती थी, वह दान देकर सन्तुष्ट हुई। जो आपने श्री राम जी और लक्ष्मण जी के उदाहरण दिए, उससे उन्हें और भी तृप्ति मिली। इस प्रकार की खुशी हमारी स्त्रियों में पहले नहीं देखी गई। बहुत अच्छी सभा हुई।"

इस तरह मैने पंजाब के एक और गांव में सभा करवाई। मेरे साथ उस परिवार की बहू और बज़ुरग पिता जी और एक दो और धर्म सम्बन्धी थे। पिता बड़े ठोस देव समाज के सेवक थे। उन्होंने बताया कि उनकी बेटी को अपनी सास का बड़ा ही विरोध सहना पड़ता है। वह हमारी पुत्री को मन्दिरों में जाने, पूजा आरती करने वा ब्रत आदि रखने के लिए ज़ोर देती है। मेरी पुत्री जो एम.

एस. सी है, किसी प्रकार मिथ्या को मानने के लिए तैयार नहीं। उसने बहुत अपमान वा विरोध झेला है। उनकी सास देव समाज की सभा में बिल्कुल नहीं आती। ऊँचे ऊँचे अपनी रामायण का पाठ करके तृप्त रहती है। पता नहीं कैसे एक सभा में, वह सास एक बार अपने आप आ गई। सभा में उच्च गुणों की प्रशंसा की जा रही थी। एक साथी सेवक ने एक परोपकारी के विषय में बहुत सुन्दर ब्यान किया। सभापति जी ने और गुणधारियों के साथ साथ सीता जी के सुन्दर गुणों का वर्णन किया सभा के बाद उस सास ने सभा की बहुत प्रशंसा की और फिर बार – 2 आने का आग्रह किया। उस साथी सेवक की प्रोफैसर बेटी को भी कुछ सुख का सांस आया कि अब शायद मेरे विरोध में कुछ फर्क आ जाए।

देव समाज की सभा संगत का मुख्य लक्ष्य, हाजरीन का ध्यान उनकी अपनी नीचता की ओर फेरना, उसे बुरा दिखाना और नीच जीवन से मुक्त होने की प्रेरणाएं, पैदा करना, नीच जीवन से मुक्त और उच्च जीवन प्राप्त करने के लिए हितकर आकर्षणों की प्रेरणाएं पैदा करना हैं। उपरोक्त सभाओं में उक्त स्त्रियों ने ऐसा कुछ नही महसूस किया। हां देव समाज के संगत के प्रति जो अरुचि थी उदासीनता उनके भीतर गहराई से भरी हुई थी, वह अवश्य कुछ कुछ कम हुई। देव समाज की सभाओं का जो मुख्य मन्तव्य उनमें कुछ भी पूरा नहीं हुआ। परन्तु फिर भी वह खुश, प्रसन्न और सेवा करने और दान करने में खुशी खुशी तैयार हो गई। इस सब का एक ही कारण था उन देवियों ने जो अपने अपने परिवारों में पैदा होकर प्रतिपालित होकर, जो संस्कार व विश्वास प्राप्त किए थे, जिन्हें वह धर्मवान होना विश्वास करती थी, उनके धर्म विश्वासों को तृप्ति मिली, उन्हें यह खुशी प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। देव समाज की सच्ची और विज्ञानमूलक शिक्षा की रोशनी के भीतर, वही पाठ वा अध्ययन, वही संगत, वही धर्म क्रिया या साधन, जिससे किसी जन का कुछ नीच जीवन या कल्पित विश्वास घटता है, और कोई उच्च जीवन प्राप्ति का आकर्षण बढ़ता है, वही केवल सच्चा धर्म है। बाकी सब आडम्बर, निरर्थक, गल्त वा उल्टे मार्ग पर पाने वाले हैं। सच्चा धर्म जीवन अपने नीच जीवन से अर्थात अपने नीच अनुरागों से मुक्त करके अधिक से अधिक विकसित करना है। केवल और केवल उच्च जीवन की प्राप्ति ही धर्म है, और सब आडम्बर अर्थहीन हैं।

गुरू महाराज की रोशनी में यह सत्य नज़र आया है कि संसार के लगभग सब बड़े – 2 धर्म नीच जीवन से मुक्त होने और उच्च जीवन के प्राप्त करने के मुख्य उद्देश्य को एक तरफ रखकर केवल मनुष्यों के संस्कारों और विश्वासों की तृप्ति कर रहे हैं। अपने विश्वासों के मनोरंजन से मनुष्य जुड़े रहते हैं, खुश और तृप्त रहते हैं और इस भयानक भुलावे के शिकार रहते हैं कि हम धर्म जीवन पा रहे हैं।

मिथ्या और बुराईयों को छोड़कर और पापों को मिटाने का नहीं बल्कि जप, सिमरण, कीर्तण, जगराते आदि करना धर्म समझा जाता हैं। कुछ सम्प्रदाय एक एक नशे या मास को बन्द करवाते हैं परन्तु अधिकतर तो खाने पीने की भी खुली छुट्टी देते हैं। राम लीला को पेश करने वाले पात्र अकसर शराब पीते हैं। शराब के नशे में धुत एक मोटे आदमी ने जो रावण बना था, राम को गिरा दिया और राम का वध करना दर्शा दिया था। राम लीला की झांकी में एक छोटे से बच्चा जो सीता बनकर बैठा था, वह बाज़ार में बीड़ी पीता जा रहा था। स्त्रियां उसके पैरों में प्रणाम कर रही थी। कई वस्तुएं उसे भेंट दे रही थी।

कुछ सम्प्रदायों के चालाक जनों ने सारी उमर

कृष्ण लीला चखकर और उसका भक्त बनाकर लाखों श्रद्धालु पैदा कर लिए हैं, जो करोड़ों रूपये की धन सम्पति इक्ट्ठी करने के लिए लोगों को लूटते हैं। वही जन घृणित काम करके आज जेल में बैठे हैं। न केवल वह स्वयं जेल में कैद हैं बल्कि उसका बेटा भी जेल में है। उन्होंने धर्म विश्वासों के द्वारा केवल लोगों का मनोरंजन किया है। उच्च जीवन की तरफ से वह स्वयं ही कंगाल है, श्रद्धालुओं और भक्तों को उन्होंने क्या देना था।

सोच विचार की आंख से देखा जाए तो अधिकतर धर्म मतों ने ऐसे मनोरंजन को अपना व्यवसाय बनाकर लोगों से धन, सम्मान और प्रसिद्धि बटोरी हैं। कोई किसी प्रकार का पाठ करके कोई व्याख्या करके, कोई दिन को, कोई रात को कीर्तन करके, कोई कथा, गोष्टी करके, कोई रासलीला रचाकर, कोई राम, कोई कृष्ण, कोई किसी और ईष्ट की लीला रचाकर, बहुत बड़े पैमाने पर, धर्म विश्वासों के मनोरंजन की इंडस्टरी चला रहे हैं। नीच जीवन से निकलने से और उच्च जीवन के साथ, उनमें से किसी का कुछ लेना देना नहीं हैं।

हर सच्चे धर्म अभिलाषी जन को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि किसी प्रकार का विश्वास रखकर, बेशक वह विश्वास सच्चा ही हो, धर्म नहीं आता अर्थात नीच जीवन जाता नहीं, उच्च भाव विकसित नहीं होता। हम देव समाज के जनों को भी यह अन्धेरा या भुलावा नहीं रखना चाहिए कि एक परम पूजनीय भगवान देवात्मा को ही सच्चा देव मानकर और विश्वास करके धर्म जीवन नहीं आता। इस अन्ध विश्वास से निकलने की नितान्त आवश्यकता है। देव समाज में भी विश्वासों के मनोरंजन से बचने की आवश्यकता है। परोहिताई को गुरू महाराज अत्यन्त घृणित दुखदाई और विनाशकारी देखते थे। बिना नीच जीवन से मुक्त होने और उच्च जीवन का लक्ष्य रखने से जो काई भी धर्म के नाम पर कुछ भी कर रहा है, या दर्शा रहा है, वह पुरोहताई ही है। यह धर्म विश्वासों के साथ खिलवाड़ और मनोरंजन के ईलावा कुछ नहीं। वहां इसके सिवा आपको कुछ नही मिलेगा जैसे भैंसे वाले घर से किसी को कभी दूध नसीब नहीं होता। ऐसी उलझन और घुम्मण घेरी से सदा कोसों दूर रहने की आवश्यकता है।

कई ज़रूरत से अधिक चालाक जनों में धर्म प्राप्ति के स्थान पर, धन प्राप्ति, प्रसिद्धि या हर मन प्यारा बनने की चाह ही होती है। वह देव समाज के विज्ञानमूलक विश्वासों को भी मनोरंजन के साथ दूसरे धर्म विश्वासों का भी साथ साथ मनोरंजन करके उपरोक्त सन्तों की तरह, हर धर्म के विश्वासियों को भी उनके मनोरंजन के द्वारा आकर्षित करके अपनी मनोरथ सिद्धि करके, आप अन्धेरे में रहते हैं और अपनी महा हानि करते हैं और अपने पीछे लगने वालों को भी अन्धेरे के गढ़े में फैंकते है और गुमराही के मार्ग पर चलकर सन्तुष्ट रखते हैं। जिसका अपने नीच जीवन से बचने का मुख्य लक्ष्य नहीं, अपने नीच जीवन को जानने का भी plan नहीं, फिकर नहीं, जिन्हें अपने नीच अनुरागों के लिए गहरा दुख नहीं, डर नहीं, वह बेशक अपनी थोथी तृप्ति में खुश वा तृप्त रहें, वह बहुत बड़ी भ्रान्ति का शिकार होते है, वह अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ा मारते हैं, उनसे किसी और को रती भर भी धर्म प्राप्ति की कोई आशा रखने का कोई लाभ नहीं। उनके पास तो जैसे कौआ, तीर से भागता है, वैसे भागना चाहिए ।

– बलदेव सिंह

नीच सुख अनुराग अन्मेल का आधार

(श्रेष्ट कैसे बनें)

नैतिकता की यह माँग है कि हम व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर मेल – मिलाप का भाव पैदा करें।

एक कहानीकार के द्वारा एक कहानी कही गई जिसका शीर्षक है – अपराजिता पत्नी। एक साधारण गाँव की लड़की थी जिसका विवाह हो गया था। उसके पति उसे कई अवसरों पर मारा – पीटा करते थे। उसी गाँव का एक लड़का था जो उस लड़की के साथ कभी बचपन में खेला करता था। विवाह के बाद भी वह उसके घर कभी कभी जाता था। वह लड़का एक बड़े नगर में शिक्षा प्राप्त कर रहा था और वहाँ छात्रावास में रहता था। एक अवसर पर जब वह उसको मिलने के लिए आया तो उसने उसे रोता हुआ पाया। उसने रोने का कारण पूछा तो उस युवती ने कहा – मेरे पति ने मुझे मारा पीटा है। वह लड़का आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर रहा था अत: उसकी यह बात सुनकर बहुत अप्रसन्न हुआ। और कहा – तुम ऐसे निर्दयी को छोड़ क्यों नहीं देती। लड़की ने एकदम रोना बन्द कर दिया और कहा – परन्तु वह मुझे प्यार भी तो करता है। उसने अपने पति को मारने पीटने वाले पति के रूप में ही नहीं पहचाना। यदि वह उसे उस रूप में जानती तो उसे भी उस लड़के की तरह अपना पति निर्दयी दिखाई देता। परन्तु यह एक अर्ध सत्य होता। यदि वह इसी अर्ध सत्य के जीवन को बिताती तो हो सकता है कि अपने पति को छोड़ देती और उससे अलग हो जाती और उसको तलाक दे देती। परन्तु उसने पूर्ण सत्य का जीवन किया। अपने पति के अच्छे गुणों की कभी भी उपेक्षा नहीं की, यद्यपि उससे पीटे जाने पर उसे पीड़ा और कष्ट भी होता था। उसने उसके स्नेह को केवल पाखण्ड या दिखावा अथवा प्रवृति जन्य कामुकता के रूप में भ्रम पूर्ण तरीके से प्रदर्शित नही किया। उसने उसकी बुराई को जीवन की अच्छाई के साथ पोतने का प्रयास नहीं किया। जब हम पूर्ण सत्य में जीने का प्रयास करते हैं तो दूसरों के साथ अनमेल रखने का विचार नहीं करते (सिवाय इसके कि हम अपना बचाव करें) क्योंकि शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसके जीवन में गुण न हों। दूसरों के साथ मेल रखना इस बात को प्रकट करता है कि हम दूसरों को उनके अवगुणों की दृष्टि से नहीं पहचानते।

यह कहानी केवल एक सत्य को प्रदर्शित करने के लिए लिखी गई है। वास्तविक जीवन में ऐसे अनेक सन्दर्भ हमारे जीवन में आते हैं। एक महाविद्यालय में एक महिला प्रोफेसर के रूप में कार्य करती है। मैनें उससे पूछा कि आपके विभाग की अध्यक्षा आपसे कैसा व्यवहार करते हैं। उसने उत्तर दिया – कभी कभी मैं उनको अत्यन्त कठोर और संकुचित दृष्टि का पाती हूँ और एक दम एकांकी तथा उपेक्षापूर्ण वृत्ति का, जब कभी उनसे बात करती हूँ। परन्तु मैं यह विचार कभी भी नहीं करती कि उनका व्यवहार अमित्रतापूर्ण है। शायद ऐसे अवसरों पर वह अपनी घरेलू समस्याओं के प्रति चिन्तित होती होंगी, किसी दाम्पत्य या आर्थिक समस्या में उलझी हुई अथवा जीवन की किसी अन्य कठिनाई में घिरी हुई होती होगी। यद्यपि ऐसे अवसरों पर मैं उन्हें अपने मित्रों के साथ प्रसन्नता से बात – चीत करते हुए देखती हूँ तो भी मैं यह महसूस करती हूँ कि वह अपनी चिन्ताओं के बोझ को अपने मित्रों से बातचीत करके हल्का करना चाहती हैं परन्तु मेरे साथ नहीं। परन्तु फिर कभी – कभी मेरे साथ उसका व्यवहार मित्रतापूर्ण होता हैं और वह स्नेह का भाव मेरे प्रति प्रकट करती हैं। मैं उसके विभागाध्यक्ष के व्यवहार की इस प्रकार उदार व्याख्या के लिए उसकी भूरि – भूरि प्रशंसा करता हूँ। कई बार हम उन लोगों के प्रति कठोर हो जाते हैं जो एक बार भी हमारे साथ अपना अभद्र व्यवहार प्रदर्शन करते हैं। हम उनकी उपेक्षा कर देते हैं, उनकी बुराई करते हैं उनसे असहयोग करते हैं। हमारी प्रथम प्रतिक्रिया दूसरे व्यक्ति के साथ अपने सम्बन्ध को तोड़ने की होती है। इस प्रकार यह हमारे जीवन के स्वभाव का एक अंग बन जाता है। परन्तु इस महिला प्रोफेसर ने अर्ध सत्य का जीवन नहीं

जिया। यदि वह अपनी विभागाध्यक्षा को एक कठोर और उपेक्षापूर्ण व्यक्तित्व के रूप में पहचानती तो वह मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उससे बहुत दूर हो जाती, यद्यपि वह उसे अपना रस्मी आदर देती रहती। जब हम किसी व्यक्ति को अपने प्रति उसके अभद्र व्यवहार के रूप में पहचानते हैं तो हम उससे कट जाते हैं। अपने आपको ऐसी भ्रमपूर्ण स्थिति से बचा लेते हैं, जब हम एक पूर्ण सत्य में जीने का प्रयास करते हैं। उसके जीवन की अच्छाईयों का मूल्यांकन भी उतना ही होना चाहिए जितना कि उसकी बुराईयों की ओर हमारा ध्यान जाता है। इस महिला प्रोफेसर ने अपनी विभागाध्यक्षा की अच्छाई और बुराई दोनों का मूल्यांकन बराबर रूप में किया।

ऊपर की घटना में सम्बन्ध का स्तर सीमित है और आपसी सम्बन्धों में तीव्रता का दर्जा इतना कम है कि मेल को स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं होती यद्यपि ऐसा होना एक अपवाद है। परन्तु कुछ भाग्यशाली लोग इसी प्रकार का मेल निकटतम सम्बन्धों में प्रदर्शन करने की क्षमता रखते हैं जैसे कि इस महिला प्रोफेसर ने अपने विभाग में अपनी अध्यक्षा के प्रति प्रदर्शन किया था।

वह एक कालेज के प्रधानाचार्य हैं। बचपन में उनकी माता का देहान्त हो गया था। उन्हें एक सौतेली माँ अपने सौतेले पुत्र के बड़े होने पर उससे शंकित और ईर्ष्यालू हो गयी। उसका अपना कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ। यह उसके जीवन की सबसे बड़ी निराशा थी। फिर अपने सामाजिक ढांचे में एक माँ को अपनी वृद्धावस्था में पुत्र के सहारे की आशा होती है। क्योंकि उसका अपना कोई पुत्र नहीं था इसलिए यह शंका बनी रहती थी कि अपनी वृद्धावस्था में उसकी बुरी हालत होगी। उसे यह भी पता था कि उसके पति को अपने पुत्र से बहुत स्नेह है। उसे यह भी शंका थी कि शायद उसका पति अपनी सम्पत्ति का स्वामी भी अपने पुत्र को बना देगा। एक शंकित और ईर्ष्यालू व्यक्ति अपने उस सम्बन्धी के प्रति कभी भी अच्छा व्यवहार नहीं कर सकता जिसके प्रति वह शंकित और ईर्ष्यालू है। अपने सौतेले पुत्र के साथ इस माँ का व्यवहार बहुत ही असन्तोषजनक था। उसका व्यवहार इतना उपेक्षा पूर्ण, कठोर था कि यदि वह बेटा अपने पिता की मृत्यु के बाद उसे उसके भाग्य पर छोड़ देता तो संसार की दृष्टि में यह न्याय संगत ही होता। परन्तु अपनी दृष्टि में वह व्यस्क ऐसे भाव शून्य व्यवहार को कभी भी न्यायपूर्ण नहीं कह सकता था। वह इस तथ्य को कभी नही भुला सकता था कि बाल्य – काल में उसकी सौतेली माँ ने उसकी देख भाल की थी। उसकी उपेक्षा करना अर्ध सत्य का जीवन जीना था, यद्यपि उनकी विमाता का उसके प्रति उदासीन व भावशून्य व्यवहार था, परन्तु अपनी विमाता को वह उसके बुरे व्यवहार से तटस्थ होकर देखता था। सौतेली माँ के जीवन का एक श्रेष्ठतम् भाग भी था जबकि उसने उसे खिलाया, नहलाया और उसकी देखभाल की। यदि जो कुछ भी जीवन में बुरा है, उसके साथ जीवन में असहयोग करना अच्छा है, तो नैतिक दृष्टि के जीवन में जो अच्छा है, उसके साथ सहृदयतापूर्वक सहयोग देना भी अपना कर्तव्य बनता है। प्रधानाचार्य महोदय ने अपनी सौतेली माँ के अच्छे व्यवहार को नहीं भुलाया। इसलिए वह अपनी विमाता के लिए सहायक हैं, उसे सहयोग देता है, और उसके प्रति सदैव उपेक्षापूर्ण और कठोर रही, वह अपनी उस विमाता की ऐसी सेवा करता है जैसी कि एक पुत्र भी जननी माता की नहीं करता। उसने सारी सम्पत्ति जो कि उसके पिता छोड़ गये थे, अपनी सौतेली माता के नाम कर दी, जबकि यह वास्तविकता यह है कि वह वेतनभोगी व्यक्ति है और उसका अपना भी बड़ा परिवार है।

अब एक दूसरी सच्ची घटना सुनें। वह एक प्रोफेसर थे। अब वह पढ़ाने के कार्य से मुक्त हो चुके हैं। उनके माता – पिता में कुछ अनबन थी। पिता ने अपने परिवार को अपने भाग्य पर छोड़ दिया। इस बालक को परिवार का सारा बोझ उठाना पड़ा क्योंकि अब कोई आय का अन्य साधन नही रहा। उसने कठोर परिश्रम किया, वह बहुत ही कठिन हालात में से गुजरा परन्तु अपनी माता तथा बहन की आवश्यकता को पूर्ण किया। कई वर्ष बीत गये और पिता की घर से अनबन जारी रही, यह

बेटा देव समाज के वातावरण में रहता था। एक दिन उसको ध्यान आया कि वह अपने पिता के प्रति अर्ध सत्य का जीवन जी रहा है। वह उसे उसके बुरे व्यवहार के रूप में देखता रहा है। उसके पिता ने सारे परिवार की आवश्यकताओं को कई वर्षों तक पूरा किया। वह उसके जन्मदाता थे। उसने पिता के एकाकी भाव को त्याग दिया, उसने अपने पिता को पत्र लिखा और अनुरोध किया कि वह पुनः परिवार में सम्मिलित हो जाएं। वह व्यक्तिगत रूप से उन्हें मिला और उन्हें सहमत करने का पूर्ण प्रयास किया। इस प्रकार परिवार का प्रसन्नता पूर्ण पुनर्मिलन हो गया। पूर्णता जो कुछ भागों में विभक्त हो गई थी वह फिर पूर्ण हो गयी। यह कभी न भूलने वाली बात है, इस बेटे ने और उसके अपने पुत्रों ने और उसकी पत्नी ने सबने मिलकर पिता की सेवा की। पिता ने अपने पुत्र से प्राप्त पूर्ण स्नेह, आदर और सेवा के साथ परलोक गमन किया। पिता का जीवन अपने पुत्र के व्यवहार से पूर्ण सन्तोष से भर गया था। सारे परिवार को ही पिता की सेवा का बहुत उत्तम आनन्द प्राप्त हुआ।

एक भाई था, उसमें और उसकी बहन में एक समय में कुछ कटुता आ गई थी। एक दूसरे से दोनों के सम्बन्ध समाप्त कर दिये। वर्षों तक वे एक दूसरे से कभी नहीं बोले। दोनों एक दूसरे के प्रति शिकायत के रूप में एक दूसरे को दोषी समझते थे। वे उपेक्षा वृत्ति कर सकते थे और अपने परस्पर सम्बन्ध में उदासीन वा कठोर हो सकते थे परन्तु सच्ची प्रसन्नता प्राप्त नहीं कर सकते थे। मन मुटाव भला प्रसन्नता कैसे होने दे सकता था। यह तो पीड़ा का स्त्रोत होता है। यद्यपि हम उस पीड़ा के प्रति अपना ध्यान हटाने का प्रयास करते हैं, तथापि आन्तरिक रूप से पीड़ा रहती ही है। आपसी सम्बन्धों में कटुता के कारण हमें कितनी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। भाई – बहन वर्षों तक एक दूसरे के साथ रहते हैं और इस प्रकार एक दूसरे के जीवन के इतिहास में प्रवेश कर जाते हैं। हमारा इतिहास हमारे साथ रहता है एक दिन इस प्रतिष्ठित व्यक्ति का हृदय इस सत्य के प्रति जाग उठा कि अपनी बहन को उसके अभद्र व्यवहार के रूप में देखना अनुचित है। उसकी बहन के जीवन का अच्छा भाग भी तो है जिसका उसे ज्ञान था। जबकि वे बचपन में अपने पिता के घर में एक साथ रहते थे। इस कटु सम्बन्ध के बावजूद बहन में अच्छे गुण भी थे। उसने इस सत्य को पूर्णता के रूप में देखना प्रारम्भ किया और साफ अनुभव किया कि किसी प्रकार का नैतिक आधार नहीं है कि इस प्रकार की कटुता और परस्पर अलगाव जारी रखा जाए। यह अलगाव इस अर्ध सत्य के कारण था कि उस व्यक्ति ने बहन को उसके बुराई के रूप में पहचाना था। अर्ध सत्य से अधिक कुछ भी अधिक भंयकरतम नहीं है। इस अर्ध सत्य की कलई खोलना बहुत कठिन है। अर्ध सत्य की पूर्ण सत्य को देखने में सबसे बड़ी बाधा है। जब वह अपनी बहन से मिला तो इससे पूर्व इसके बारे में उसका विचार केवल उसके बुरे व्यवहार तक ही उसे पहचान रहा था। यहाँ तक कि उसका पूर्व का अच्छा व्यवहार भी उसको नज़र नही आ रहा था। जब किसी के साथ हमारा अनमेल हो जाता है तो हम उसे केवल बुरा ही नहीं बल्कि पूर्ण रूप से बुरा बताने लगते हैं, उसमें कोई भी अच्छा गुण हम नहीं देख पाते क्योंकि ऐसा करने पर हमारी कटुता के आधार के साथ न्याय नहीं होता। अब वह भाई प्रकाश में था और अपनी बहन को केवल उसके बुरे व्यवहार के रूप में नहीं देखता था। परन्तु अभी भी वह पूर्ण प्रकाश में नहीं था। उसका विचार था कि जब वह अपनी बहन से मिलने जाएगा तो बहन उसका स्वागत नहीं करेगी जिसका यह अर्थ था वह महसूस करता था कि उसमें कोई अच्छी बात है ही नहीं। उसी अवस्था में वह अपनी बहन के घर गया। उसके मन में यह विचार था कि आखिर मैं उसका भाई हूँ। जब वह बहन से मिला तो उसे प्रतीत हुआ मानों उसे स्वर्ग मिल गया है। उसका यह संदेह कि उसकी बहन में अब कुछ भी अच्छाई की बात नहीं है, उस स्नेह में जो कि उसे अब अपनी बहन से मिला, भूल गया। दो जीवन जोकि असत्य के कारण अलग – अलग हो गये थे फिर एक दूसरे से मिल गये। उनके अलगाव का आधार यह था कि एक समझता था कि दूसरे में कोई अच्छाई की

बात है ही नहीं। वे स्नेह और समझ के कारण एक हो गये। यदि दो व्यक्तियों में स्नेह और समझ पैदा हो जाए, तो क्या इससे बढ़कर अन्य कोई वरदान हो सकता है।

वह एक लड़की है। उसका विवाह बहुत ही छोटी आयु में जबकि उसने केवल दसवीं कक्षा पास की थी, हो गया था। कुछ वर्षों के बाद उसके पति को शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाहर जाने का अवसर मिला। वहाँ उसने दूसरा विवाह कर लिया। यह स्वभाविक था कि उसकी पहली पत्नी को बहुत आघात लगता। उसके ससुर को भी इससे बहुत धक्का लगा। पिता ने अपनी बेटी को एक चिकित्सा महाविद्यालय में प्रवेश दिला दिया। उसने अपना कोर्स सफलता पूर्वक समाप्त कर लिया और वह एक सफल चिकित्सक बन गई।

उसका पति अपनी विदेशी पत्नी के साथ लौटा और पंजाब में बस गया। देश का विभाजन हुआ जिसमें जान माल की बहुत हानि हुई। वह जानती थी कि उसका पति और उसके बच्चे देश विभाजन के कारण बहुत बड़े संकट में है। उसने उसके लिए और पूरे परिवार के लिए हवाई जहाज की व्यवस्था की, जब वह पाकिस्तान से भारत आया तो उसकी पहली पत्नी ने उसको फिर बस जाने में मदद की।

उसका पति और उसकी विदेशी पत्नी काफी समय तक ठीक प्रकार से व्यवस्थित न हो सके। पति ने अपनी विदेशी पत्नी को तलाक देना चाहा और पुन: अपनी पहली पत्नी के पास लौटना चाहा। परन्तु उसकी पहली पत्नी ने उनका तलाक नहीं होने दिया और अपने पति को अपनी विदेशी पत्नी के साथ ही सहमति पूर्वक रहने में सहायता की।

यदि पहली पत्नी ने अपने पति को एक ऐसे रूप में जिसमें कि उसने वफादारी का परिचय नही दिया था, देखा होता तो पाकिस्तान से उसको बचा कर लाने का कोई प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता और विदेशी पत्नी के साथ उसको सहमतिपूर्वक रहने के लिए भी बिल्कुल सहयोग न देती। यद्यपि वह उसके साथ जीवन की सहभागी नही बन सकी फिर भी उसकी पत्नी में कर्तव्यभावना बनी रही। वह सोचती थी कि उसका पति उसके लिए अपनी बेवफाई से अधिक कुछ और भी था। उसने उसके प्यार को भी जाना था । उसका उसके प्रति कर्तव्य अपरिवर्तित रहा क्योंकि अपने पति को उसने केवल बुराई के रूप में नहीं पहचाना था। इसलिए उसके पति के लिए उसके सहयोग के द्वार खुले रहे।

एक समाज सेविका थी, उसके पति ने उसकी सामाजिक सेवा में सदैव सहायता की। कमजोरी के क्षणों में उसका पति एक चालाक स्त्री के फन्दे में आ गया और उसका पतन हो गया। उसने अपनी पत्नि के आगे अपनी गल्तियों को स्वीकार किया और अपने पतन के लिए उससे क्षमा माँगी। पत्नी ने उसको पतन के रूप में पहचाना और उसको छोड़ दिया। वह चली गई और अपने माता – पिता के साथ रहने लगी। उसके पति का उसे वापस जीत लेने का प्रयास असफल हो गया। वह इस असत्य के साथ जीती रही कि उसका पति एक पतित इन्सान है। वर्षों बीत गये, पत्नी सामाजिक कार्यों में खूब व्यस्त रहती थी फिर भी उसे अकेलापन अनुभव होने लगा और समय के साथ यह भाव बढ़ने लगा। एक कमजोर क्षण में उसने अपने एक साथी कार्यकर्त्ता को अपने आप को आलिगंन करने का अवसर दे दिया। यह अनुभव उसकी आंखें खोल देने वाला था। वह एकदम (तत्काल) अपने पति के स्थान पर गई और उसके प्रति किये गये अपने अन्याय के लिए क्षमा मांगी। पति उसके लौटने पर बहुत प्रसन्न हुआ। पत्नी के निजी अनुभव ने उसका इस असत्य से मुक्ति दिलाई कि किसी व्यक्ति को केवल उसकी बुराई के रूप में नहीं पहचानना चाहिए और उसे मानवीय सहयोग से वंचित नहीं करना चाहिए और उसकी सहभागिता का अधिकार नहीं छीन लेना चाहिए। यह कोई नैतिक आधार नहीं है कि मनोवैज्ञानिक रूप से एकाकीपन किया जाए, अलगावपन की स्थिति उत्पन्न की जाए और इतनी दूरी व्यक्ति से कर ली जाए कि निकट आने का कोई आधार ही न रहे, क्योंकि पुन: स्नेहपूर्ण स्वागत, स्नेह और सहयोग जो कि उसके जीवन की अच्छाई के लिए हो, की यथेष्ट गुंजाइश है।

यह परम श्रेष्ठ मानव की क्रिया है। हम प्राय:

उदासीन, उपेक्षापूर्ण और असहयोग का व्यवहार प्रारम्भ कर देते हैं यदि दूसरे के साथ हमारी विचार विभिन्नता हो जाए और यदि वह हमारे साथ अशिष्टता पूर्ण व्यवहार करे या हमारे अहं पर आघात लगाए या हमारे साथ स्वार्थ पूर्ण बरताव करे। कुछ भी हो, मानव अनमेल की समाप्ति के लिए अन्य कोई मार्ग नहीं है जब तक हम उच्च स्तर के मानव न बनें। एक मात्र इस अनमेल का हल ये है कि या तो हम अति मानव बन जावें या उन उच्च आत्माओं के संग में रहें या देवात्मा के साथ अपना सतत् सम्बन्ध स्थापित करें।

यह मेरी गल्ती नहीं है

यह शब्द अधिकतर सुनने को मिलता है कि मेरी कोई गल्ती नहीं। यदि किसी की किसी चीज़ से ठोकर लग जाती है, और वह गिर जाता है, तो अक्सर यही सुनने को मिलता हैं कि जिसने वह चीज रखी है, उसकी लापरवाही व गलती है, लेकिन उसे देखकर चलना चाहिए, यह मानना कठिन है। यदि यही गल्ती किसी और से हो तो वही जन कहेगा कि तुम देखकर नहीं चल सकते थे। मुझे याद है कि मेरे पिता जी को गर्म दूध पसन्द था, तो जब कोई उन्हें गर्म दूध देते, तो वह झट मुंह को लगा लेते और जब जुबान जल जाती तो कहते थे कि मुझे बताया क्यों नहीं, कि इतना गर्म है। यह मनुष्य का स्वभाव है। हम कहते तो यही हैं कि मनुष्य गल्तियों का पुतला है, परन्तु समझते यही हैं कि हम उन में नहीं है। अक्सर हम अपनी गल्ती को Justify करते रहते है। अपनी गल्त क्रिया के लिए भी, वह क्रिया चाहे किसी की कितनी हानि करती हो, अनैतिक हो, परन्तु हम उसे ठीक सिद्ध करने की कोशिश करते हैं।

अब निर्भया का विभीषण कांड जो हमारे देश में हुआ, जिसने हमारे देश को ही नहीं, दुनियां को हिलाकर रख दिया, उस वभीत्स कांड का करने वाला युवक, जिसे सज़ा भी हो रही है, यह कह रहा कि उसने कुछ गलत नहीं किया। इससे बड़ी मनुष्य जाति में अन्धकार की क्या बात हो सकती है।

आतंकवादी कह रहे हैं कि जो हम खून बहा रहे हैं, वह हमारी गल्ती नहीं हम तो सबाब कमा रहे हैं। अब हम इन विभीत्स कांडों को सुनकर तो यही सोचते हैं कि वह लोग तो पागल हैं, जो इतनी बड़ी गल्ती को भी स्वीकार नहीं करते, परन्तु हम में से कोई भी छोटी या बड़ी गल्ती करके मानने को तैयार नहीं होता कि मैं गल्त हूं। यदि कोई पत्नी पर हाथ उठाता है, तो यही सोचता है कि इसने यह नहीं किया, वह नही किया और मुझे गुस्सा दिलवा दिया, मैंने जो किया ठीक किया, वह उसी के लायक है। यदि कोई रिश्वत लेता है, तो वह Justify करता है कि सरकार वेतन ही उतना नहीं देती कि हम गुज़ारा कर सकें इसलिए रिश्वत लेनी पड़ती है। चाहे एक पुलिस वाला रिश्वत लेते ही शराब खरीदकर पी ले और काम के समय भी पी ले तो भी उसे अपनी गलती नज़र नहीं आती।

एक – 2 जन अपराध करता है, सब सबूत उसे दोषी ठहराते हैं, परन्तु फिर भी अपने मुंह से यह स्वीकार नहीं करता कि उसकी गलती है।

एक – 2 जन दूसरों के हक का अपहरण करता है। जमीन में, किराए में, जायदाद में, वह सब जानता है कि मैंने अपने लाभ के लिए ऐसा किया है, परन्तु वह Justify करता रहता है कि मैंने किसी का हक नही मारा, जबकि उसके सब सम्बन्धी जानते हैं कि उसने अन्याय किया है, बेईमानी की है, परन्तु उसका लालच गरीब, सीधे साधे जनों का हक मारकर भी वह अपने आपको बिल्कुल ठीक साबित करने में लगा रहता है।

यदि मनुष्य अपनी गलती को स्वीकार करने लग जाए, तो कचहरियों में केस दिनों में निपट जाएं। सम्बन्धोां में कोई कड़वाहट न रहे, परन्तु मनुष्य का लालच, अहं, स्वार्थ कभी ऐसा नहीं करने देता। अपने आपको बचाने के लिए एक – 2 मनुष्य निर्दोषों को फंसा

देता है। घर में छोटे-2 बच्चे भी अपनी गलती न मानकर कई बार दूसरे बच्चे को पिटवा देते हैं। बचपन से ही मनुष्य अपने आपको ठीक सिद्ध करने में लगा रहता है।

यहां तक कि धार्मिक संस्था का पदधारी यह कहकर कि क्योंकि उसने यह परोपकार का काम करने के लिए जीवन दान दिया है, तो इस संस्था से अधिक अधिक सुख सुविधाएं लेने, पैसे का दुरपयोग करने का मुझे हक है, जबकि न उसके जीवन से कोई श्रेष्ठ काम निकलता है, और न वह संस्था का कोई उपयोगी अंग बन सका। वह अपनी सुख सुविधाओं को अपने ढंग से Justify कर रहा है, जबकि अन्य संस्था के मैंबर इसकी अलोचना करते हैं, तो भी उसे कोई परवाह नहीं। वह अपने आपको ठीक ठाक समझता है और अपनी ढींगे हांकता रहता है।

हमें हमेशा कहा जाता है कि मनुष्य अपनी गल्तियों से सीखता है, परन्तु गल्ती नज़र ही नहीं आएगी तो सीखेगा कैसे। बूढ़े माता पिता घर घर में कुरला रहे है, परन्तु बच्चे यही कहते है कि यह हैं ही इस लायक। एक-2 बच्चा अपनी मर्ज़ी पूरी न होने से मां का बाजू तोड़ देता है, फिर भी नहीं समझता कि यह मेरी गल्ती है। पति पत्नी कि रिश्ते दिन पर दिन टूट रहे हैं। परन्तु दोनों ही यह नहीं मानेंगे कि मेरी गल्ती है। शराबी को पत्नी पैसे नहीं देती, जो उसने बच्चों की फीस के लिए रखे हैं, पत्नी को पीटता है, परन्तु कहेगा यही कि इसकी गलती है, जो पैसे नहीं देती, मेरी क्या गल्ती है।

मनुष्य का यह स्वभाव सब प्रकार के लड़ाई झगड़े, पाप, मिथ्या को जन्म देता है। कोई धर्म, पूजा, पाठ, जप मनुष्य को उसके इस स्वभाव को नहीं दिखा सकता। उसके संस्कार, जो बहुत हानिकारक हैं, उन्हें भी नहीं दिखा सकता। मैंने एक किताब पढ़ी जिसका हैडिंग था - Mistakes are made but not by me (गल्तियां हुई है, परन्तु मेरे द्वारा नहीं) उन्होंने एक Tribe डिंका और बियोर का उदाहरण दिया है कि वह अपने बच्चों के आगे वाले दांत निकाल देते, वह बहुत एक बिमारी हुई थी, जिससे जबड़े सील हो जाते थे। उस समय एक बिमारी फैलने के कारण शुरू हुई प्रथा, वह आगे चलाते गए और वह इसे ठीक और जिनके आगे के दांत होते थे, उन्हें गल्त समझते थे।

मनुष्य मिथ्या संस्कारों को ही ठीक समझता है, कोई आग पर चलना, कोई बच्चों को उछाल उछालकर दर्द देना, कोई धागे, तवीत करना, किसी माता को बिमारी के समय मत्था ठेकना, ठीक समझते हैं, इसी का लाभ उठाकर सन्तों, महन्तों, पण्डों, पुजारियों के वारे न्यारे हो रहे हैं। जन्म, मरण के संस्कार एक-2 गरीब को सारी उमर के लिए कर्ज़ाई बना देते हैं। पर समझाने पर भी उन्हें समझ में नहीं आता। वही प्रथाएं आगे चलती रहती हैं। जितने मजदूर किस्म के आदमी दूसरी गरीब स्टेटों से आते हैं, वह कर्जे में डूबे होते हैं। सारी उमर माता पिता की बात नहीं पूछते, घर में खाने को नहीं परन्तु उनकी मृत्यु पर पूरे-2 गांव को खाना खिलाकर सारी उमर कर्ज में डूब जाते हैं, उन्हें समझाओ उन्हें कुछ समझ नहीं आता, यही सोचते हैं कि हम जो कर रहे है, वही ठीक है।

मनुष्य के भीतर अहं, स्वार्थ का जितना अधिकार होता है, उतना ही वह अपनी सोच, अपनी बुद्धि, अपने विचार अपने कर्मों को ठीक सिद्ध करने में लगा रहता है। उससे न केवल लड़ाई, झगड़े, अनमेल की उत्पत्ति होती है, उसके सुधार का मार्ग भी बन्द हो जाता है।

हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि हम इस विषय पर विचार करें, अपने आपको ठीक सिद्ध करने की बजाए अपनी गल्ती को स्वीकार कर उसे सुधारने का यत्न करें, इससे हमारा रुतबा दूसरों के आगे घटेगा नहीं बल्कि सुमेल बढ़ेगा। छोटी-2 बातों से अनमेल पैदा होता है और छोटी छोटी गल्तियों को स्वीकार करने से मेल ।

-सुरजीत बराड़

'मृत्यु – बोध'

धर्म – वान बनने के लिए अति आवश्यक ।

मृत्यु को ठीक से समझों क्योंकि उसके आधार पर ही जीवन में क्रांति आएगी। आपको यदि पता चल जाए कि आज सांझ ही आपकी मृत्यु हो जायेगी, तो क्या आप सोचते हैं कि आपके आज के दिन का व्यवहार वही रहेगा जो हर रोज़ होता है? क्या आप उसी भाँति जी सकोगे, जैसे हर रोज़ जीवन व्यतीत करते हो? क्या आप उसी तरह दुकान पर जा सकोगे और अपने ग्राहकों का शोषण उसी तरह करने के लिए तैयार हो जाओगे, जैसे कल किया था? क्या पैसे पर आपकी पकड़ आज भी वैसी हि होगी जैसी कल थी। क्या आपके मन में नीच – वासनाएं उसी तरह उठेंगी, जैसी कल तक उठती थीं, क्या काम – वासना आपको उसी तरह सुन्दर स्त्रियों की ओर आकर्षित करेगी? कोठियाँ, कारें तथा ऐशो – इशरत के सामान क्या आपके लिए उसी तरह आकर्षण पैदा कर सकेंगे? किसी का विशाल और सुन्दर भवन क्या आपके लिए उसी तरह इर्ष्या का केंद्र बना रहेगा? क्या आपके जीवन में कोई आनंद बाकी बचा रह जाएगा?

नहीं, नहीं, बिल्कुल नहीं। आपके लिए जीवन के अर्थ ही बदल जाएंगे। यदि आपको यह पता चल जाए कि आज सांझ तक ही मेरी मौत हो जायेगी, तो जीवन में सारा आनंद हि समाप्त हो जाएगा तथा कुछ भी आपको अच्छा नहीं लगेगा। जीवन का सारा प्रायोजन ही बदल जायेगा। जीवन का सारा ढंग और शैली ही बदल जायेगी। मौत का ज़रा सा स्मरण मनुष्य को वहीं नही रहने देता, जहाँ वह आज तक मस्त होकर जीवन काटता रहा है। क्योंकि सिवाए दु:ख और डर के होने के तुम्हारे पास और कुछ भी फल नहीं लगेगा। फल निश्चित तौर पर लगते हैं लेकिन केवल दु:ख और निराशा के। फल लगते हैं परन्तु आशाओं के विपरीत, तुम्हारे सपनों से बिलकुल उलट।

एक सेठ जी थे जो धर्म – कर्म में कोई विशेष रूचि तो न रखते थे लेकिन साधू – संतो के सत्संग – अवसर मिलने पर सुन लेते थे, उनका स्वागत और सेवा पानी भी बहुत करते थे। अपने व्यापार में हर समय व्यस्त रहते थे। जब कभी किसी संत – महात्मा के पास उन्हें बैठने का अवसर मिलता, धर्म विषयक प्रश्न बहुत पूछते थे, मगर उन में धर्म के विषय में कोई विशेष प्रगति न हुई। प्रश्न पूछ पूछ कर वह दूसरों को बहुत परेशान किया करते थे।

एक बार सेठ जी ने एक महात्मा जी से पूछा, "महात्मा जी आप संसार में रहते हुए पूजा – पाठ तथा भक्ति किस तरह कर लेते है"? सेठ जी में धर्म – विषयक कोई प्रगति हुई न पाकर, संत ने कहा "सेठ जी, पहले मैं आपका भविष्य देखकर आपको बताना चाहता हूँ, बाकी प्रश्नों के उत्तर आपको इसके बाद दूंगा।" अपने भविष्य के बारे जानने के लिए सेठ जी उत्सुक होते हुए बोले,"अवश्य महाराज।" संत जी ने सेठ जी का मस्तक देखकर कहा " सेठ जी आप एक सप्ताह के पश्चात मर जायेंगे।" इसके बाद महात्मा जी बोले, सेठ जी आपके क्या क्या प्रश्न थे, कृप्या बताएं ताकि मैं आपको समुचित उतर दे सकूं। तब तक सेठ जी इतने परेशान हो चुके थे, कि उनको सारे प्रश्न ही भूल गए। अब उनको एक ही बात याद आ रही थी कि मृत्यु मेरी तरफ सरपट दौड़ी चली आ रही है। मरने से पहले मैं कुछ ऐसा कर जाऊं कि मेरे सारे पाप धुल जाएं।

सेठ जी का मन अब संसार, सांसारिक वस्तुओं और सब सम्बन्धिओं से उचाट रहने लगा। व्यापार में भी मन नही लगता था। खाना – पीना कुछ अच्छा नही लगता था। हर समय अपने कक्ष में बंद रहने लगे। इस तरह एक – एक करके छ: दिन गुज़र गए, तो महात्मा जी को सूझा कि सेठ जी के प्रश्नों के उतर तो उन्हें दे

आऊँ, कही वह उत्तर पाने के लिए परेशान न हों। इस प्रकार महात्मा जी सेठ जी के कारखाने पर पहुंचे और उन के नौकरों से कहा कि मुझे सेठ जी से मिलवा दो। नौकरों से पता चला कि सेठ जी तो पिछले छः दिन से कारखाने में आये ही नहीं। वह तो कोठी से बाहर ही नहीं निकले। महात्मा जी ने सेठ जी की कोठी की राह पकड़ ली। कोठी पर जाकर पता चला कि सेठ जी की आज्ञा है कि उन्हें अकेला रहने दे और कोई परेशान न करे, वह किसी से मिलना नहीं चाहते, वह अपने किसी विशेष कार्य में व्यस्त हैं। महात्मा जी ने जिद्द की कि वह सेठ जी से अवश्य मिलना चाहते हैं, उन्हें मेरे आने की सूचना दी जाए और मुझे उनसे मिलवाया जाए । मजबूरीवश सेठ जी को महात्मा जी के आने की सूचना दी गई। सेठ जी छः दिन के पश्चात अपने कक्ष से बाहर निकले थे, काफी थके–हारे, कमज़ोर और परेशान लग रहे थे। महात्मा जी ने मिलते ही कहा, सेठ जी, मैं आपके प्रश्नों के उत्तर देने आया हूँ। महात्मा जी ने मिलते ही कहा, सेठ जी, मैं आपके प्रश्नों के उत्तर देने आया हूँ। इससे पहले कि आप का देहावसान हो जाए, कृप्या अपने प्रश्न दोहराएं। सेठ जी ने हाथ जोड़कर क्षमा माँगी और कहा, भगवन आपको प्रश्नों की पड़ी है, यहाँ मेरी जान पर बन रही है। मुझे किसी प्रश्न का उतर नहीं चाहिए। मुझे मेरा काम करने दें, मैं बहुत व्यस्त हूँ। महात्मा जी ने पूछा कि सेठ जी, मृत्यु आपके सर पर मंडरा रही है और आप काम में व्यस्त हैं। ऐसा क्या ज़रूरी कार्य आप पर आन पड़ा है जो आप मृत्यु के सर पर होते हुए भी उसे पूरा करना चाहते हैं। सेठ जी ने कोई उतर नहीं दिया, बल्कि एक सूची महात्मा जी के सामने रख दी जिसको पढ़ कर पता चला कि सेठ जी ने अपनी तमाम ज़मीन–जायदाद, रुपया–पैसा सब दान कर दिया था। महात्मा जी ने पूछा, सेठ जी यह क्या कर रहे हो? अपना सब कुछ दान कर दोगे, तो आपका और आपके बच्चों का क्या बनेगा? सेठ जी कहने लगे, संत जी क्यों मज़ाक करते हो, मै आपके बताए हुए भविष्य से सब कुछ समझ गया जो आप मुझे बताना चाहते हैं। अब मुझे समझ आ गया है, कि मेरे लिए सबसे पहले मेरे आत्मा का हित है, बाकि सब बाद में। यदि मै हि नही रहा तो कौन किस की बीवी और कौन किसका बेटा? अब मुझे समझ आ गया कि आप संसार में रहते हुए कैसे धर्म विषयक सच्चा आचरण और साधन कर लेते हैं?

प्यारे साथियो। हम सब को शारीरिक मृत्यु का केवल अल्प ज्ञान है, बोध नहीं। इस अल्प–ज्ञान की बदौलत भी हम वर्षों मृत्यु से बचे रहते हैं, और सारी उम्र बचे रहने का संग्राम भी करते हैं, और इस प्रयास में बहुत सीमा तक सफल भी रहते हैं। आत्मिक मृत्यु भी होती है, इस बात का न हमें ज्ञान है, न बोध। इसलिए आत्मिक–मृत्यु से न हमें डर लगता है, न उससे बचने के लिए हमारे जीवन में कोई संग्राम ही होता है। हमारा बड़ा सौभाग्य है कि हमें इसी दुनिया में रहते रहते भगवान की यह अमूल्य शिक्षा मिल गई है। हम जितनी इसकी कदर करेंगे, उतने ही हित लाभ करेंगे। मेरी तुच्छ समझ के अनुसार कदर करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम सत्य का दिल तथा जीवन से सन्मान करें, उसका साथ दें। शुभ का दिल तथा जीवन से सन्मान करें, तथा उसका साथ दें। इसी तरह झूठ और बुराई का डट कर विरोध करें, अन्यथा भगवान् देवातमा का यह अमूल्य दान हम से छिन जाएगा। एक पुराना फिल्मी गीत मुझे इस समय याद आ रहा है, जिसके बोल थे,

"तेरी गठरी में लगा चोर–मुसाफिर जाग ज़रा"

अर्थात हम भीतर से भी और बाहर से भी अपने आत्मिक–शत्रुओं से बुरी तरह घिरे पड़े हैं, जो हमें आत्मिक–मृत्यु देने के लिए अपनी ताक लगाए बैठे हैं।

काश! हम सब परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के सत्य धर्म–मूलक आह्वान को हृदयगत भावों से स्वीकार कर सकें तथा अपने जीवन में उतार सकें।

(चन्द्रगुप्त) अम्बाला

धर्म का नशा

नशामुक्ति के नाम पर आम आदमी की हर परेशानी पर पैसा कमाने वाले धर्मगुरुओं को किस तरह पकापकाया जरिया मिल गया है, पड़ताल कर रहे हैं – भारत भूषण

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के जंबूरी मैदान पर 16 फरवरी को हजारों लोग सिर झुकाए और हाथ बांधे एक धार्मिक जलसे में खड़े थे । इस दिन एक धर्मगुरु शक्तिपुत्र महाराज भक्तों को आशीर्वाद इस बाबत भी दे रहे थे कि उन की नशे की लत छूट जाए। इस नशामुक्ति आशीर्वाद के लिए बाकायदा कैंप लगा कर भक्तों का रजिस्ट्रेशन भी किया गया था और तमाम धार्मिक काम पूजापाठ व आरती वगैरह भी किए गए थे जिन में भक्तों ने दिल खोल कर पैसा चढ़ाया। यह सिलसिला 19 फरवरी तक चला। आखिरी दिन नशा छुड़ाने के लिए एक मानव श्रृंखला बनाई गई और नशेड़ियों को नशा छोड़ने की नसीहत देते उन से संकल्प भी कराया गया।

इसके बाद लाखों की दक्षिणा नशे से आज़ादी के नाम पर बटोरते हुए महाराज आगे की तरफ बढ़ लिए, मानो, भोपाल में नशे की समस्या हल हो गई हो।

अगले दिन 17 फरवरी को महाशिवरात्रि का त्योहार था। इस दिन भोपाल की भांग की दुकानों पर भी बेशुमार भीड़ थी, लोग भांग की गोलियां खा रहे थे, ठंडाई पी रहे थे और नशे में झूमते हरहर महादेव, बम बम भोले और जय भोले शंकर जैसे नारे लगा रहे थे, भीड़भाड़ वाले बाजार न्यू मार्केट में रंगमहल टाकीज के सामने भांग के ठेके पर तो इतने भक्त नशा करने के लिए उमड़े कि ट्रैफिक ही जाम हो गया था।

महज एक दिन के अंतर से दिखे ये 2 नजारे बताते हैं कि धर्म का कारोबार कैसे कैसे फलताफूलता जा रहा है और उसकी हकीकत क्या है। एक तरफ एक धर्मगुरु नशे से छुटकारा दिलाने के नाम पर दोनों हाथों से पैसे बटोरता है तो दूसरी तरफ धर्म और शंकर के नाम पर हजारों लोग बगैर किसी हिचक के नशा करते हैं।

यह सिलसिला यहीं नहीं रुका, इसके बाद तो कई धर्मगुरुओं ने अपने उपदेशों में नशा छोड़ने की सलाह देना शुरू कर दी, जिस से लगा, मानो ये धार्मिक जलसे नहीं, बल्कि चलतेफिरते नशामुक्ति केन्द्र हों जिन में बाबाजी के आशीर्वाद से ऐसा चमत्कार होता है कि लोग खुद ब खुद नशा छोड़ देते हैं या जादू के जोर से नशे की लत छूट हो जाती है।

नशे से छुटकारा

नशे से छुटकारा दिलाने का आइडिया धर्मगुरुओं को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिला है जिन्होंने नशे के खिलाफ कुछ दिन पहले जोरदार भाषण दिया था। जैसे ही पीएम की आवाज पर नशे के खिलाफ सुगबुगाहट शुरू हुई तो धर्म के ठेकेदारों ने मौका भांपते मुद्दा लपक लिया।

आम आदमी की हर परेशानी पर पैसा कमाने वाले धर्मगुरुओं को आमदनी बढ़ाने के लिए एक और पकापकाया जरिया मिल गया। कल तक जो धर्मगुरु नशे की चर्चा से भी परहेज करते थे वे एकाएक ही नशा छोड़ने की सलाह इसलिए देने लगे कि इस से उन के जलसों में न केवल भीड़ उमड़ने लगी बल्कि लोग दक्षिणा भी दे रहे हैं।

बेशक नशा बुरी चीज है लेकिन धर्म के नशे के बुरी और नुकासानदेह नहीं, जिस के जाल में एक बार आदमी फंसा तो जिंदगीभर मछली की तरह छटपटाता रहता है। तमाम धर्मगुरु गरीबी और बदहाली की वजह इस और पुराने जन्म में किए गए पापों को बताते हुए उन्हे दूर करने की फीस लेते हैं, नशा इस दुकान में कहीं फिट नहीं बैठता, इसके बाद भी नशे के नाम पर दुकान चलाई जा रही है। इससे साफ है कि ये लोग नही चाहते कि लोग इस ऐब या लत से छुटकारा पाएं, अगर उन की मंशा और नीयत साफ होती तो वे बजाय कैंप लगाने के शिवरात्रि के दिन भांग के ठेकों पर खड़े हो कर लोगों को भगवान के प्रसाद के नाम पर भांग का खतरनाक

नशा करने से रोकते और होली पर शराब की दुकानों के सामने तंबू तान कर बताते कि धर्म नशे का विरोध करता है वकालत नहीं।

शिवरात्रि और होली के मौके पर धर्मगुरु नशे के खिलाफ कुछ नहीं कहते। किसी धार्मिक किताब में नहीं लिखा कि नशा मत करो उलटे कई जगह जिक्र इस बात का आता है कि खुद देवता सुरापान किया करते थे यानी शराब पीते थे। नशे की सलाह लोगों को उस धर्म से ही मिलती है जिस के ठेकेदार इस का विरोध कर रहे हैं।

देवता तो देवता, हालात यह है कि शिवरात्रि पर बड़े बड़े शंकर मंदिरों में भांग का प्रसाद पंडो द्वारा चढ़ाया जाता है। इस पर कोई बाबा या संत एतराज नहीं जताता कि यह रिवाज गलत है। यह तो आम लोगों को नशा करने को उकसाता है। होली पर शराब इस बार भी पानी की तरह पी गई क्योंकि यह रिवाज सदियों से चला आ रहा है। जो लोग शराब नहीं पीते वे होली पर भांग का सेवन, प्रसाद की तरह ही करते है।

खुद बाबा, संत और मठाधीश किस तरह नशे के आदी होते हैं, यह हर कहीं देखने में आता है। भोपाल के नजदीक भोजपुर शंकर मंदिर में शाम से ही भक्तों की भीड़ जुटनी शुरू हो जाती है। मकसद, भक्ति या पूजा की आड़ में नशा करना रहता है। इन मंदिरों में मूर्तियों के समाने मुस्टंडे बाबा गांजे की चिलमें जलाते हैं और पहला कश शंकर के नाम पर लेते है। फिर यह चिलम उन के चेलों के मुंह से होती हुई भक्तों के पास चली जाती हैं। भक्त लोग बाबा को प्रणाम कर जय भोले शंकर की हुंकार भर मुंह से ढेर सा धुआं आसमान की तरफ छोड़ देते हैं।

इलाहाबाद, हरिद्वार और बनारस सरीखे धार्मिक शहरों में तो ऐसे बाबाओं की भरमार है जो नशे की लत फैलाते हैं। बड़ी बड़ी जटाओं वाले वे बाबा दिनभर घरघर जा कर भगवान के नाम पर दक्षिणा यानी भीख मांगते हैं, फिर शाम को मंदिरों में नशे की महफिल जमाते है। दक्षिणा में मिली नकदी से ये गांजा, भांग, तंबाकू और बीड़ीसिगरेट खरीदते है। खाने का इंतजाम तो नीचे वालों के जरिए ऊपर वाला कर ही देता है। नशे में डूबते ये भक्त एवज में बाबाओं को पैसा चढ़ा आते हैं। इन लाइसैंसशुदा हुक्का लाउंज का कोई विरोध नहीं करता।

धर्म के नाम पर नशा

कई फिल्मों में खासतौर से देवानंद की 'हरे रामा हरे कृष्णा' में खुलेतौर पर दिखाया गया है कि कैसे नौजवान लड़के लड़किया रामनामी दुशाला ओढ़े व चिलम फूंकते रामकृष्ण की जय बोलते झूमते रहते हैं।

भक्तों को समझाने वाला कोई नहीं होता कि देवताओं और देवियों के नाम पर वे नशा कर अपनी सेहत और जिंदगी तबाह कर रहे हैं। नशा करने से भगवान मिलता होता तो सबसे पहले उसे शराब की दुकान में मिलना चाहिए और यह हो भी रहा है। करोड़ों लोग सदियों से नशा कर भगवान को ढूंढ़ रहे हैं जो आज तक किसी को नहीं मिला। अलबता नशे का सामान जरूर लोगों को बड़ी सहूलियत से मिल जाता है ताकि वे अपने गम भूल जाएं और भगवान को न कोसने लगें।

धर्म के नाम पर पहले नशे की लत डालो और फिर उसे दूर करने के लिए दिखावटी मुहिम चलाओ, यह धर्मगुरुओं की बदनीयती और चालाकी ही है जिस का मकसद पैसा कमाना है। वाहवाही बटोरते धर्म के ये ठेकेदार दरअसल पीएम की मंशा पर पलीता ही फेर रहे हैं जो एक तरफ नशे से बचने की बात करते हैं तो दूसरी तरफ धर्म के नाम पर ही नशा करने की छूट देते हैं।

नशे की लत से छुटकारा पाने के लिए जरूरी यह है कि लोग पहले धर्म का नशा छोड़ें जो रोजमर्राई परेशानियों और फसादों की जड़ है। धर्म के नशे की लत बचपन से ही डाल दी जाती है। जिसे तमाम कोशिशों के बाद भी छोड़ना या छुड़ाना नामुमकिन हो जाता है। कदम कदम पर धर्म के नशें के इंतजाम हैं जिन में नशे के आइटमों की खूब किस्में हैं और भगवान के नाम पर ही इसे करने की आज़ादी है।

नवरात्रि के दिनों में तांत्रिक क्रियाओं के नाम पर भी तांत्रिक छक कर शराब पीते हैं। वे क्या खा कर आम लोगों को नशा छोड़ने का मशवरा देंगे, यह सोचने

वाली बात है। जो पंडेपुजारी मंदिरों में भांग पी कर झूमते हों, वे कैसे दूसरों का नशा छुड़ा पाएंगे, यह तो और भी ज्यादा सोचने वाली बात है। पर यह तय है कि अब नशे से छुटकारे के नाम पर ये पैसा जरूर बटोरते रहेंगे। इन लोगों में इतनी हिम्मत नहीं हैं कि वे यह कह पाएं कि उस देवता और धर्म की पूजना और मानना बंद करो जो नशे का आदी बना कर भक्तों की जिंदगी बरबाद, सेहत खोखली और जेब खाली करते हैं।

(सरिता से साभार)

खुशी बाहर नहीं, आपके भीतर है

खुशी को लेकर आजकल बहुत काम होता है। खुशी हासिल करने के वर्कशॉप तक लगाए जाते हैं। सभी चाहते है खुशी मिल जाए। ऋषि – मुनियों ने कहा है कि खुशी बाहरी स्थिति नहीं हैं, मानसिक अवस्था है। हमारी सोच की दिशा खुशी में बदल जाती है। खुशी को बाहर से अर्जित नहीं करना है। इसकी तैयारी भीतर से होती है। टंकी में पानी डाला जाता है और कुएं में जमीन से आता है। भोग – विलास टंकी में डाला गया पानी है। खुशी कुएं में फूटा झरना है। खुशी को हमारे भीतर यदि कोई रोकता है तो वे हैं हमारी वासनाएं। भीतर सक्रिय वासनाएं जहां से खुशी आती है, उसी जगह लेपन करती है। आप बाहर कितने ही अच्छे काम कर लीजिए। लेकिन भीतर से खुश रहने के लिए तैयार नहीं हैं तो अच्छे से अच्छा काम भी मशीनी हो जाएगा और यदि हम भीतर से तैयार हैं, तो फिर जो भी काम करेंगे वह अनूठा होगा। अपनी खुशी दूसरों में ढूंढ़ने वाले लोग लंबे समय इस यात्रा को नही कर पाएंगे। संसार में रहते हैं, तो दूसरों के बिना जीवन कट भी नहीं सकता, संबंध निभाने भी पड़ेंगे। कई बार कुछ रिलेशन तकलीफ भी देते हैं। आपकी खुशी को खा जाते हैं, लेकिन यदि आपने भीतर से इसे जानने की तैयारी कर ली तो खुशी आपकी मुट्ठी में है। फिर कोई भी संबंध इससे छेड़छाड़ नहीं कर सकता। हम खुशी बाहर ढूंढेंगे और यदि प्राप्त भी करेंगे तो या तो वह उसकी छाया होगी या अस्थायी रूप । व्यक्ति या परिस्थिति हटी तो खुशी भी गई, इसलिए खुशी अपने भीतर ढूंढ़ लें।

जीवनसाथी को बदलने का प्रयास न करें

जीवनसाथी के मामले में हर व्यक्ति का निजी स्वप्न होता है और इसी आधार पर जीवनसाथी ढूंढ़ा जाता है। विवाह के बाद पत्नी चाहती है पति वैसा हो जाए जैसे मैंने सोचा था। पति अपनी कल्पना के अनुसार पत्नी को ढालना चाहता है। दोनों ने अपने मन में जीवनसाथी की आदर्श छवि बनाई हुई थी और दोनों जुट जाते है एक – दूसरे को उस आदर्श छवि की कार्बन कॉपी बनाने में। यह झंझटों को सीधा आमंत्रण है, क्योंकि हरेक के पास अपनी अपूर्णता है। सबसे भीतर दोष हैं। पहले इन्हें स्वीकार किया जाए, फिर श्रेष्ठ उजागर होना चाहिए। जीवनसाथी को बदलने का आग्रह दाम्पत्य टूटने का कारण बन सकता है। इस रिश्ते की खूबी यह है कि इसमें कई बातें इशारों से चलती है।दाम्पत्य में संकेत और दिशा का बड़ा महत्व है पति – पत्नी के बीच समझ बन जाए, तो एक – दूसरे से बोल – बोलकर जुबान व माथा चलाने और खपाने की ज्यादा जरूरत ही न पड़े। अधिकांश जोड़ों की ज्यादातर ऊर्जा इसी में खर्च हो रही है, इसलिए विवाह के पश्चात तो जैसा है पहले उसे स्वीकार करें और परिवर्तन के लिए संकेतों से काम करें, संवादों से कम। इसमें प्रेम का भाव, अपनेपन की भावना और एक – दूसरे के लिए जीने की तमन्ना बहुत काम आएगी।

श्री गंगानगर में विशेष सत्संग

(22 मई 2015 से 25 मई 2015 तक)

श्री गंगा नंगर (राजस्थान) में 22 मई 2015 से 25 मई 2015 तक देव धर्म मिश्न द्वारा विशेष सत्संग का प्रोग्राम रखा गया। इसके लिए लोकल सेवकों श्री गोपाल कृष्ण जी, श्री प्रकाश चन्द जी दिवान, भाटिया साहिब और डाक्टर मुन्शा सिंह जी ने अपने सहायकों की सहायता से विशेष प्रबन्ध किए। सत्संग की सूचना के लिए विशेष कार्ड छपवाए गए। एक विशेष पैम्फलेट भी प्रकाशित किए और बांटे गए। यात्रियों के ठहरने के लिए पदमा देवी गोयल भवन जवाहर नगर में 25–डी मदन विहार में उत्तम प्रबन्ध किया गया। भवन के बाहर सुन्दर झंडियां लगाई गई जो भवन की शोभा बढ़ा रही थी। पुस्तकों के लिए हाल के गेट पर सुन्दर टेबल लगाकर उत्तम प्रबन्ध किया गया। बहुत अच्छा खाने का भी प्रबन्ध किया गया। भवन के भीतर सुन्दर माटोज़ शोभयामान थे। गुरू महाराज की सुन्दर छवि विशेष स्थान पर सुशोभित थी। उच्च कर्मचारियों की फोटोज़ को एक मेज पर सजाया गया। सारे प्रोग्राम की कार्ड द्वारा सूचना दी गई। बाहर के स्थानों पदमपुर, मेरठ, यमुना नगर, संगरूर (मौड़ां) मल्लेका, केसूपुरा, चण्डीगढ़, कल्याण आदि स्थानों से धर्म सम्बन्धी पहुंचे। सभाएं नीचे दिए गए विषयों पर श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने करवाई। भजनों का गान श्रीमान जगदीष प्रसाद जी कुक्कड़, श्री देश राज जी सुरीला पदमपुर और श्रीमान गुरूचरण सिंह जी पदमपुर ने हरमोनियम, वा तबले पर बड़े उत्साह के साथ किया। सभाओं का विवरण नीचे दिया जा रहा है :–

<u>22 मई 2015 रात 8.30 बजें :–</u> सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने पहली सभा कराई, जिसका विषय था मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है? श्री सभापति ही ने बताया कि साधारणत: मनुष्य लक्ष्य वहीन ही जीवन व्यतीत कर देता है। दुनियां का मान मर्तबा, धन दौलत ही अपना लक्ष्य बनाया हुआ हैं। कई अपना लक्ष्य कहलाने वाले परमात्मा को पाना बताते हैं। कोई इसके द्वारा स्वर्ग प्राप्ति को लक्ष्य समझते हैं। कोई चौरासी जूनियों से मुक्ति प्राप्त करना लक्ष्य समझते है। कुछ लोग खाओ, पीओ और मौज उड़ाओ यही लक्ष्य समझते हैं। परन्तु अपने सार अस्तित्व अर्थात आत्मा को जाने के बिना कोई लक्ष्य नही बनता अपने आपको जानने के लिए भगवान देवात्मा की ज्योति की आवश्यकता है। विश्व के भीतर विशेषकर अपने देश के भीतर जितना भ्रष्टाचार वा अत्याचार फैला हुआ है, जितना दुख वा नर्क है, उसकी तह में मनुष्य के परिचालक नीच भाव हैं। ऐसी नारकिय जीवन को देखकर यह कहना बिल्कुल उचित है कि भ्रष्टाचार, बलात्कार thy name is India सारा विश्व दुखों का घर इसलिए बना हुआ है कि मनुष्य की परिचालक शक्तियाँ नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं हैं। मनुष्य का लक्ष्य ऐसे नीच भावों से मुक्ति प्राप्त करना है। उच्च भावों को अपने भीतर पैदा करके ही इस महा दुखदाई और ज्हन्नुमी अवस्था को परिवार और समाज में स्वर्ग में बदला जा सकता है। देवात्मा के देव प्रभावों के बिना न अपने आपको जाना जा सकता है और न नीच भावों से मुक्ति पाई जा सकती है। इन अन्मोल प्रभावों के बिना उच्च भावों की उत्पत्ति भी नहीं होती। सभापति जी ने बताया कि नीच भावों से मोक्ष और उच्च भावों को पैदा करना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है। इस सभा में लगभग 70 जनों ने भाग लिया।

<u>23 मई 2015 सुबह 8 बजें :–</u> सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। विषय था धर्म की क्यों आवश्यकता है? मनुष्य ने धरती, आकाश के विषय में

बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है। परन्तु उसे अपना ज्ञान नही हुआ। मनुष्य की मूल इच्छा जीने की है, उसकी पूर्ति के लिए उसे धर्म की आवश्यकता है। मनुष्य स्वभाव से सुख चाहता है, परन्तु सच्चे सुख की प्राप्ति धर्म बिना सम्भव नहीं। मनुष्य को विनाश और सर्वनाश से बचने के लिए, अपनी निर्माणकारी शक्ति के वास्तव स्वरूप को समझना होगा। यदि धर्म होगा तो अनुचित दुखों द्वारा मनुष्य अपनी हस्ती का अन्त नहीं करेगा। एक बहुत बड़े डाक्टर के जीवन का वर्णन करते हुए सभापति जी ने बताया कि उस महान और अमीर डाक्टर ने भी आत्म अन्धकार कारण निराशा में अपने जीवन का अन्त कर लिया। स्वार्थ मनुष्य का जीवन मन्त्र बना हुआ है, जिससे जीवन का नाश होता है। इसकी असली तस्वीर देखने के लिए मनुष्य को धर्म की आवश्यकता है। नीच जीवन, नीच भाव निराशा पैदा करते हैं। जब तक नशे, मांसाहार रहेगा, मिथ्या विश्वास रहेंगे, नीच भावों का अधिकार रहेगा, धन का अनुचित अधिकार रहेगा, मनुष्य बर्बाद होने वा करने के लिए मजबूर रहेगा। उच्च भावों वा धर्म भावों की सदा आवश्यकता रहेगी। सभापति जी ने बड़े ज़ोरदार भावों से धर्म की आवश्यकता बताई।

23 मई 2015 रात 8.30 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा का विषय था, उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए अनुकूल वातावरण इस सभा में भी हाजरी 70 के लगभग थी। सभा प्रचालक ने पहले एक मान्सिक माडल बनाने का यत्न किया कि उच्च जीवन क्या होता है। उच्च भावों वा उच्च बोधों की तस्वीर बनाकर उसके द्वारा उच्च जीवन की तस्वीर बनाई। मोटे मोटे पापों के त्याग के बिना उच्च जीवन की प्राप्ति के विषय में सोचा भी नहीं जा सकता। जैसे प्रतिकूल मौसम में फसलों की बुआई नहीं होती। अब गर्मी का मौसम है। गेहूं, चने वा आलुओं की फसलों के लिए अनुकूल नहीं है। पापी, जूएबाज, व्यसन करने वाले, कसाई, व्यभिचारी हृदय उच्च भावों की प्राप्ति के लिए प्रतिकूल वातावरण पैदा करते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा शुभ अनुरागी हैं। उनकी देव प्रकृति ने उनके देव जीवन को विकसित करने का अनुकूल वातावरण पैदा किया। उनके देव प्रभावों ने उच्च जीवन के माडल पेश किए हैं। उनके ऐसे देव प्रभावों ने श्रद्धेय श्रीमान धर्म बल जी पैदा किए हैं जो रिश्वत को दूसरों का खून पीना महसूस करते थे। देव धर्म के अनुकूल वातावरण ने स्वार्थी लोगों को दाता जी बनाया है। ऐसे फिलासफर, प्रिंसीपल इस वातावरण में पैदा हुए हैं। जिन्होंने बच्चों के मान्सिक विकास के भिन्न उनकी छोटी छोटी सेवा को ही धर्म समझा है। ऐसे स्वर्गिय वातावरण में अधिकारी जन श्रद्धावान बनकर अपने भिन्न भिन्न रिश्तों को स्वर्गीय बनाते हैं। एक 2 बेटा जो मां को (रांड) अपशब्द कहता था ऐसा सेवाकारी वा आज्ञाकारी बनाया कि मां पुकार उठी कि "मदन तूं ने तो मेरे पेट पड़े का बदला चुका दिया।" सभापति जी ने बहुत ही प्रभावदायक शब्दों में अपना ब्यान किया, उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रीमति सावित्री सिद्धू के परिवर्तन की सुन्दर झांकी पेश की।

24 मई 2015 सुबह 8.00 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी 'सभा का विषय था' सुख, शान्ति और प्रेम भरा जीवन कैसे सम्भव है। इस सभा में भी 60 – 65 जन शामिल थे। श्री सभापति जी ने बताया कि धर्म स्थानों में कत्ल क्यों हो जाते हैं। मोटा कारण यही है कि जिन्हें वह सुख का सामान समझते हैं, असल में वह सुख का सामान नहीं है। इन्हीं के कारण दुख पैदा होते हैं। दीप चन्द जी शराब के कारण ही किस कदर दुख पा रहे थे, परन्तु गुरू के प्रभावों ने उन्हें त्यागने के योग्य बनाया और अब सन्मान पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं। शाम लाल जी Smoking से दुखी थे, अब

आप और परिवार खुश प्रसन्न है। इन्सान नशे पीता है पर धीरे 2 नशे ही उसको पी जाते हैं। उसकी सुख शान्ति का अपहरण करते हैं। इसी शहर में कई वर्ष पहले एक डाक्टर के विरूद्ध जलूस निकला था क्योंकि वह अपनी पुत्रवधू के साथ ऐसी हरकत कर बैठे कि उसने जान गंवा दी। काम वासना के सुख के आकर्षण ने बदनामी तो करवाई, जेल भी गए। एक जन मछली के खाने का सुख लेते हुए उसका कांटा गले में फंसने से अपनी जान गंवा बैठे। एक 2 जन लोहे की जंजीर बनाता था, पर धन अनुराग के आकर्षण से इतनी बनाता गया कि उसमें ही दबकर मर गया। नीच आकर्षण दुख और मुसीबत लाते हैं।

जो सुख ईमानदारी, पवित्रता में है वह धन जमा करने वा काम वासना के अनुचित अधिकार में नहीं मिलता। इन सुखों की श्रेणी बहुत उच्च किस्म की है। श्री सभापति जी रणखण्डी, यू.पी. के बाप बेटे की कथा सुनाई कि बेटा काम वासना के अधिकार में रहकर मौत का शिकार हो गया है। उपयोगी वस्तुएं खाने की भी कोई सीमा होती है। फिर सभापति जी ने सन्मान भाव, श्रद्धा भाव, शुक्रगुजारी के उच्च सुखों की सुन्दर घटनाएं बताकर हृदयों को उभारा। सरदार सावन सिंह जी की शुक्रगुज़ारी की घटनाएं बताई कि किस प्रकार अपने उपकारी सरदार जमीयत सिंह जी के पोते को पालने के लिए ले गए, जबकि उसे पालने में उनकी बेटी की बलि चढ़ गई। कई लड़कियों की पवित्रता की घटनाएं बताते हुए श्रीमान जी की श्रद्धा वा सन्मान साफ झलक रहा था। उच्च भाव ही सुख और शान्ति का साधन है।

24.5.2015 शाम को 5.30 बजें :- श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कई धर्म सम्बन्धियों को लेकर एक सभा की। इसमें विशेष तौर पर निज के साधन करने की आवश्यकता और विधि का वर्णन किया।

24.5.2015 रात 8:30 बजें :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभा में 70 के लगभग जन शामिल हुए। उन्होंने कहा अरब देश में आतंकवादी कत्लेआम कर रहे हैं। बेकसूर मनुष्यों को गोलियों, बम्बों आदि अनेक विस्फोटक पदार्थो से मौत के घाट उतार रहे हैं। जो मनुष्य नफरत और जनून फैलाते हैं वह मानवता के शत्रु हैं। पंजाब के एक मुख्य मन्त्री को आत्मघाती बम्ब से उड़ा दिया गया था। ऐसे आत्मघाती मानवता के भीषण शत्रु है। यह जुल्म, बिमारियां मनुष्य के शत्रु हैं।

कुछ मनुष्यों के भीतर ऐसे शत्रु है, जिनका उसे ज्ञान नहीं। मनुष्य के मिथ्या विश्वास मानव सभ्यता के घातक शत्रु है। इसे घातक शत्रु ने एक मुलाज़म जोड़े का एक मासूम की बलि देने के लिए जेल जाना पड़ा। मनुष्य के भीतर कई प्रेम उसके शत्रु हैं। धन का प्रेम, अहं प्रेम, नशा प्रेम और कई सुख अनुराग इतने बढ़े हुए हैं जो उसके घातक शत्रु बन गए हैं। कई उदाहरणों से उन्हें स्पष्ट किया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव ज्योति इन घातक शत्रुओं को वास्तविक रूप में दिखाती है, उनकी घातकता से सुचेत करती है। सच्चा डर पैदा करती है। उनकी हानियाँ और बर्बादियों को दिखाती है। मैंने इस निराले दर से बहुत रक्षा पाई है। उच्च सुखों का भागी भी बना है। मेरे जैसे कई सौभाग्यवान जन हुए इन घातक शत्रुओं से कुछ न कुछ जाग्रित हो कर उच्च बरकतों के भागी बने हैं। एक सौभाग्यवान इसी शहर के वकील, मेरे सत्गुरू की निराली शक्ति से उपकृत हुए हैं। उनका परिवार उच्च सुखों का भागी बना है। अब स्वयं अपने जीवन की कथा आपके सामने पेश करेंगे।

फिर श्रीमान जगदीष प्रसाद जी ने अपने पहले जीवन की झांकी, जिसमें नशे, सिगरेट, शराब, चोरी, जुआ आदि पाप थे, उनसे गुरू ने बचाया है। उन्होंने अपने जीवन की स्पष्ट वा सरल शक्ल पेश की। शिकार वा मांसाहार की दिल को हिलाने वाली घटनाएं पैदा हुई हैं।

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सत्य धर्म बोध उत्सव

सत्य देव की जय

आपको यह जान कर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव इस वर्ष भी हर वर्ष की तरह पूरे चावभाव से 25 सितम्बर 2015 से 27 सितम्बर 2015 तक मनाया जा रहा है। इस वर्ष यह मुबारक उत्सव देव आश्रम निकट डेराबस्सी में ही रखा गया है। इस उत्सव से पहले 7 दिन का विशेष सत्संग (19 सितम्बर 2015 से 25 सितम्बर 2015 की सुबह तक) रखा गया है। आपकी सेवा में पुरज़ोर प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं ऐसे शुभ अवसर का लाभ उठाएं, बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी अधिक से अधिक संख्या में साथ लाकर सच्चे पुण्य के भागी बनें। सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा 25 सितम्बर शाम 4.30 बजे आरम्भ होगी।

नोट:- देव आश्रम चण्डीगढ़ अम्बाला जी.टी. रोड पर डेराबस्सी से अम्बाला की तरफ प्राय: 3 किलोमीटर की दूरी पर गलास पैलेस (Glass Palace) के पास स्थित है। मौसम अनुकूल यात्री अपने ओड़ने के लिए उचित वस्त्र ज़रूर लेकर आएं, कृपा होगी।

प्रोग्राम

25 सितम्बर शुक्रवार

प्रवेश सभा : 4:30 बजे शाम
विषय : सत्य धर्म बोध उत्सव की विशेषता।
यात्रियों का स्वागत।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

26 सितम्बर शनिवार

पहली सभा : 9.00 बजे सुबह
विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।

दूसरी सभा : 11:00 बजे सुबह
विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।

तीसरी सभा : 4.30 बजे शाम
विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

27 सितम्बर इतवार

पहली सभा : 8.30 बजे सुबह
विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।

दूसरी सभा : 10.00 बजे सुबह
विषय : सभाओं से उठाए हुए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन।

सन्मान भाव से प्रार्थी
बलदेव सिंह मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts